प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

समन्वित रोग प्रबंधन में नई तकनीक के साथ पारंपरिक ज्ञान भी जोड़े-डा. शर्मा
पौधों के डाक्टर प्रशिक्षित किये जाने की आवश्यकता-डा. सिंह

पंतनगर। २१ दिसम्बर, २०१७। फसलों के रोग प्रबंधन हेतु पादप रोग विज्ञान को मूल-भूत विज्ञान, नये ज्ञान व तकनीकों तथा किसानों की पारंपरिक प्रथाओं के साथ जोड़कर समन्वित रोग प्रबंधन की रणनीति बनाये जाने की आवश्यकता है। यह बात आज पंतनगर विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति, डा. ए.पी. शर्मा, ने विश्वविद्यालय के डा. रतन सिंह सभागार में आयोजित 'समगतिशील रोग प्रबंधनः दृष्टिकोण एवं अनुप्रयोग' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में कही। डा. शर्मा संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय संबोधन दे रहे थे। कार्यशाला का आयोजन कृषि महाविद्यालय के पादप रोग प्रबंधन विभाग एवं इंडियन फाइटोपैथोलॉजी सोसाइटी द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के दक्षिण एशिया स्थानीय केन्द्र, बनारस, के निदेशक, डा. यू.एस. सिंह, थे। इस अवसर पर सोसाइटी के अध्यक्ष, डा. बी.एन चक्रवर्ती एवं सचिव, डा. दिनेश सिंह, के साथ-साथ सोसाइटी के मध्य-पूर्वी जोन के जोनल अध्यक्ष, डा. के.पी. सिंह; कार्यवाहक अधिष्ठाता कृषि, डा. डी.एस. पांडे; कार्यवाहक निदेशक शोध, डा. जयंत सिंह; एवं विभागाध्यक्ष पादप रोग विज्ञान विभाग, डा. करूना विशुनावत भी मंचासीन थीं।

डा. शर्मा ने अपने संबोधन में पादप रोग प्रबंधन की सस्ती एवं वातावरण हितैषी तकनीकों का विकास किया जाने के लिए भी वैज्ञानिकों से कहा, जिसमें रासायनिक तकनीकों के स्थान पर जैविक एवं अन्य तकनीकों का समावेश किये जाने की आवश्यकता बतायी। डा. शर्मा ने कहा कि वातावरण में बदलाव के कारण नये-नये रोग एवं रोक-कारकों का प्रादूर्भाव हो रहा है, जिनके कारण नये तरीकों के इजाद की आवश्यकता है, जो समगतिशील कृषि के विकास में सहायक हो सकें।

डा. यू.एस. सिंह ने कहा कि मानव रोग विज्ञान अब एक कला के रूप में विकसित हो चुका है, जबकि पादप रोग अभी विज्ञान की स्थिति में ही है। उन्होंने कहा कि इसे कला के रूप में विकसित करने के लिए पौधों के डाक्टर तैयार किये जाने होंगे, जो किसानों तक पहुंचकर उनकी फसलों के रोगों की पहचान कर उनका इलाज बता सकें। इसके लिए उन्होंने कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा इस प्रकार के पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किये जाने तथा राज्य व केन्द्र सरकार से इस ओर ध्यान देकर आवश्यक कार्यवाही किये जाने के लिए कहा। डा. सिंह ने यह भी कहा कि रोगों का उचित निदान न हो पाने के कारण किसानों द्वारा गलत रसायनों का प्रयोग किया जाना आम है, जिसके निवारण के लिए किसानों तक पादप रोग निदान की सुविधायें प्रसार वैज्ञानिकों द्वारा पहुंचायें जाने के प्रयास बढ़ाने होंगे।

उद्घाटन सत्र में डा. डी.एस. पांडे ने रोग प्रबंधन द्वारा ५ प्रतिशत तक उत्पादन की हानि को रोके जाना भी खाद्य सुरक्षा हेतु काफी बताया। साथ ही किसानों की आय बढ़ाने हेतु समन्वित उपाय किये जाने की आवश्यकता बतायी। डा. के.पी. सिंह ने गढ़वाल के हर्सिल क्षेत्र में सेब की स्कैब बीमारी के प्रबंधन हेतु की गयी खोज के बारे में प्रस्तुतिकरण दिया। डा. बी.एन. चक्रवती एवं डा. दिनेश सिंह ने आई.पी.एस. के उद्देश्यों व कार्यकलापों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. विशुनावत ने सभी अतिथियों व उपस्थित जनों का स्वागत किया तथा अंत में जोनल काउंसलर, डा. ए.के. तिवारी ने संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग हेतु सभी का धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र में मंचासीन अतिथयों व वैज्ञानिकों द्वारा संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। इस तीन-दिवसीय कार्यशाला में देश के मध्य-पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न राज्यों से वैज्ञानिक एवं शोधार्थी उपस्थित हुए हैं। कार्यशाला का समापन २३ दिसम्बर २०१७ को होगा।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में स्मारिका का विमोचन करते मंचासीन अतिथि व वैज्ञानिक।